बीटी बैंगन कहीं कांड न बन जाए

नेचर इण्डिया के हाल के अंक में शुभ्रा प्रियदर्शिनी ने खबर दी है कि संभवतः महिको ने बीटी बैंगन के परीक्षणों से सम्बंधित सारी जानकारी जिनेटिक इंजीनियरिंग एप्रूवल कमिटी के समक्ष प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में उजागर नहीं की है। हो सकता है कि बीटी बैंगन के प्रतिकूल असर को छिपाया या कम करके बताया गया हो।

महिको वह कंपनी है जो देश में बीजों के कारोबार में लगी है। महिको ने ही 2002 में देश की पहली जिनेटिक रूप से परिवर्तित फसल - बीटी कपास - तैयार की थी और उसे व्यापारिक उपयोग की अनुमति भी मिली थी।

ऐसा पता चलता है कि जंतु अध्ययनों में जिन चूहों को बीटी बैंगन की खुराक दी गई थी उनमें प्रतिरोध क्षमता में गिरावट, ज़िगर यानी लीवर में क्षति और प्रजनन सम्बंधी विकार पाए गए थे। ये बातें महिको द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में नहीं बताई गई थी, जबकि उसी रिपोर्ट के आधार पर जिनेटिक इंजीनियरिंग एप्रूवल कमिटी ने बीटी बैंगन के व्यापारिक उपयोग की अनुमति दे दी थी। यह अलग बात है कि देश भर में व्यापक विरोध के चलते फिलहाल बीटी बैंगन के उपयोग पर रोक लगा दी गई है।

न्यूज़ीलैण्ड के रोग-प्रसार वैज्ञानिक लाउ गेलेगर ने रिपोर्ट में प्रस्तुत आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर उक्त बातें बताई हैं। गेलेगर ने आंकड़ों और उनकी व्याख्या के बीच कई विरोधाभास पाए हैं। जैसे रिपोर्ट में कहा गया था कि '1000 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा. के हिसाब से (बीटी बैंगन की) खुराक देने पर चूहों के अंगों के भार में कोई बदलाव नहीं हुआ।' मगर वास्तव में अंडाशय और प्लीहा (पित्ती) के वज़न में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ था।

वैसे ही विवादों से घिरे बीटी बैंगन के बारे में इस तरह जानकारी को छिपाने या उनकी मनमानी व्याख्या करने से लगता है कि यह मामला अभी और तूल पकड़ेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***